सिलसिला नं. 49

Munne Ki Lash (Hindi)

मुन्ने की लाश

(ग़ौसे आ'ज़म رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की ह़िकायात)

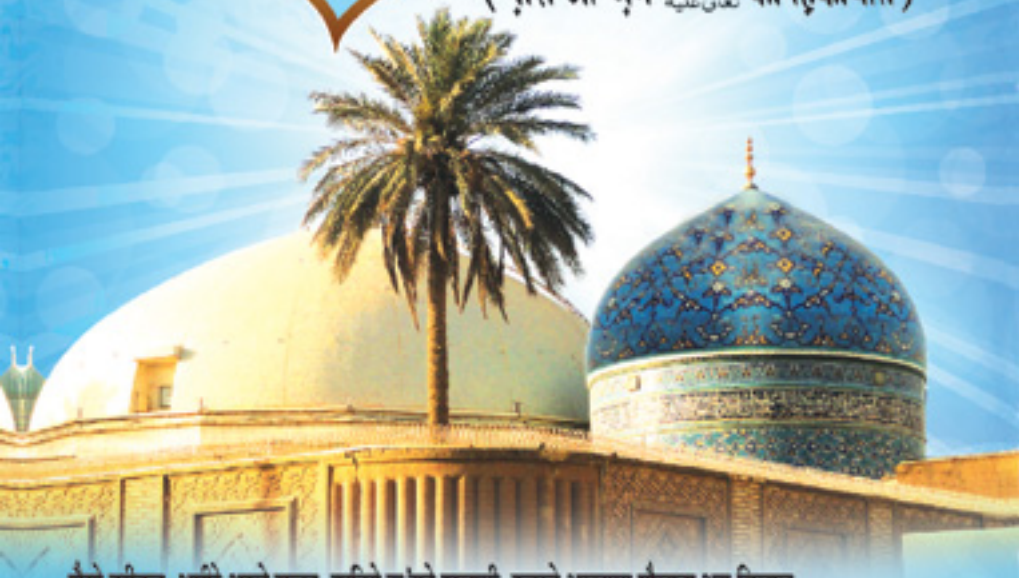

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

مکتبۃ المدینہ
(دعوت اسلامی)

SC1288

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

(मुन्ने की लाश)

येह रिसाला **(मुन्ने की लाश)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब या ई-मेइल) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

मुन्ने की लाश

शैतान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (18 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप के दिल में ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की मह़ब्बत मज़ीद बढ़ जाएगी ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नबिय्ये मुअ़ज़्ज़म, रसूले मोह़तरम, सुल्त़ाने ज़ी ह़शम, सरापा जूदो करम, ह़बीबे मुकर्रम, मह़बूबे रब्बे अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुसल्मान जब तक मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहता है फ़िरिश्ते उस पर रह़मतें भेजते रहते हैं अब बन्दे की मरज़ी है कम पढ़े या ज़ियादा ।

(اِبن ماجه ج١ ص٤٩٠ حديث ٩٠٧ دارالمعرفة بيروت)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ानक़ाह में एक बा पर्दा ख़ातून अपने **मुन्ने की लाश** चादर में लिपटाए, सीने से चिमटाए ज़ारो क़ित़ार रो रही थी । इतने में एक ''म-दनी मुन्ना'' दौड़ता हुवा आता है और हम-दर्दाना लहजे में उस ख़ातून से रोने का सबब दरयाफ़्त करता है । वोह रोते हुए कहती है : बेटा !

मेरा शोहर अपने लख़्ते जिगर के दीदार की ह़सरत लिये दुन्या से रुख़्सत हो गया है, येह बच्चा उस वक़्त पेट में था और अब येही अपने बाप की निशानी और मेरी ज़िन्दगानी का सरमाया था, येह बीमार हो गया, मैं इसे इसी ख़ानक़ाह में दम करवाने ला रही थी कि रास्ते में इस ने दम तोड़ दिया है, मैं फिर भी बड़ी उम्मीद ले कर यहां ह़ाज़िर हो गई कि इस ख़ानक़ाह वाले बुज़ुर्ग की विलायत की हर त़रफ़ धूम है और इन की निगाहे करम से अब भी बहुत कुछ हो सकता है मगर वोह मुझे सब्र की तल्क़ीन कर के अन्दर तशरीफ़ ले जा चुके हैं। येह कह कर वोह ख़ातून फिर रोने लगी। ''म-दनी मुन्ने'' का दिल पिघल गया और उस की रह़मत भरी ज़बान पर येह अल्फ़ाज़ खेलने लगे : **''मोह़-त-रमा ! आप का मुन्ना मरा हुवा नहीं बल्कि ज़िन्दा है ! देखो तो सही ! वोह ह़-र-कत कर रहा है।'' दुखियारी मां ने बेताबी के साथ अपने ''मुन्ने की लाश'' पर से कपड़ा उठा कर देखा तो वोह सचमुच ज़िन्दा था और हाथ पैर हिला कर खेल रहा था।** इतने में ख़ानक़ाह वाले बुज़ुर्ग अन्दर से वापस तशरीफ़ लाए। बच्चे को ज़िन्दा देख कर सारी बात समझ गए और लाठी उठा कर येह कहते हुए ''म-दनी मुन्ने'' की त़रफ़ लपके कि तूने अभी से तक़्दीरे ख़ुदा वन्दी के सर बस्ता राज़ खोलने शुरूअ़ कर दिये हैं ! म-दनी मुन्ना वहां से भाग खड़ा हुवा और वोह बुज़ुर्ग उस के पीछे दौड़ने लगे, ''म-दनी मुन्ना'' यकायक क़ब्रिस्तान की त़रफ़ मुड़ा और बुलन्द आवाज़ से पुकारने लगा : **ऐ क़ब्र वालो !** मुझे बचाओ ! तेज़ी से लपक्ते हुए बुज़ुर्ग अचानक ठिठक कर रुक गए **क्यूं कि क़ब्रिस्तान से तीन सो300 मुर्दे उठ कर उसी ''म-दनी मुन्ने'' की ढाल बन चुके थे और वोह ''म-दनी मुन्ना'' दूर खड़ा अपना चांद सा चेहरा चमकाता**

मुस्करा रहा था। उन बुज़ुर्ग ने बड़ी ह़सरत के साथ "म-दनी मुन्ने" की त़रफ़ देखते हुए कहा : बेटा ! हम तेरे मर्तबे को नहीं पहुंच सकते, इस लिये तेरी मरज़ी के आगे अपना सरे तस्लीम ख़म करते हैं।

(مُلَخَّص از الحقائق فی الحدائق ج ۱ ص ۴۲ وغیرہ مکتبۃ اویسہ رضویہ، بہاولپور پاکستان)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप जानते हैं वोह "म-दनी मुन्ना" कौन था ? उस म-दनी मुन्ने का नाम **अ़ब्दुल क़ादिर** था और आगे चल कर वोह **ग़ौसुल आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के लक़ब से मश्हूर हुए।

क्यूं न क़ासिम हो कि तू इब्ने अबिल क़ासिम है
क्यूं न क़ादिर हो कि मुख़्तार है बाबा तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बचपन शरीफ़ की सात करामात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم मादर ज़ाद वली थे। ﴿1﴾ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अभी अपनी मां के पेट में थे और मां को जब छींक आती और इस पर जब वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहतीं तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पेट ही में जवाबन يَرْحَمُكِ اللّٰه कहते (الحقائق فی الحدائق ص ۱۳۹) ﴿2﴾ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه यकुम **र-मज़ानुल मुबारक** बरोज़ पीर सुब्हे सादिक़ के वक़्त दुन्या में जल्वा गर हुए उस वक़्त होंट आहिस्ता आहिस्ता ह़-र-कत कर रहे थे और **अल्लाह अल्लाह** की आवाज़ आ रही थी (اَیْضًا) ﴿3﴾ जिस दिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की विलादत हुई उस दिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दियारे विलादत **जीलान शरीफ़** में **ग्यारह सो**1100 **बच्चे** पैदा

हुए वोह सब के सब लड़के थे और सब **वलिय्युल्लाह** बने (تفریح الخاطر ص۱۵) ﴿4﴾ ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने पैदा होते ही रोज़ा रख लिया और जब सूरज ग़ुरूब हुवा उस वक़्त मां का दूध नोश फ़रमाया । सारा **र-मज़ानुल मुबारक** आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का येही मा'मूल रहा (بهجة الاسرار ص۱۷۲) ﴿5﴾ पांच[5] बरस की उ़म्र में जब पहली बार بِسْمِ اللهِ पढ़ने की रस्म के लिये किसी बुज़ुर्ग के पास बैठे तो اَعُوْذ और بِسْمِ اللهِ पढ़ कर सूरए फ़ातिहा और الٓمّٓ से ले कर अठ्ठारह पारे पढ़ कर सुना दिये । उन बुज़ुर्ग ने कहा : बेटे ! और पढ़िये । फ़रमाया : बस मुझे इतना ही याद है क्यूं कि मेरी मां को भी इतना ही याद था, जब मैं अपनी मां के पेट में था उस वक़्त वोह पढ़ा करती थीं, मैं ने सुन कर याद कर लिया था (الحقائق فی الحدائق ص۱۴۰) ﴿6﴾ जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लड़क-पन में खेलने का इरादा फ़रमाते, ग़ैब से आवाज़ आती : ऐ अ़ब्दुल क़ादिर ! हम ने तुझे खेलने के वासिते़ नहीं पैदा किया (ایضاً) ﴿7﴾ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मद्रसे में तशरीफ़ ले जाते तो आवाज़ आती : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली को जगह दे दो ।" (بهجة الاسرار ص۴۸)

न-बवी मींह अ़-लवी फ़स्ल बतूली गुलशन
ह़-सनी फूल हुसैनी है महक्ना तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

करामत की ता'रीफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ अवक़ात आदमी करामाते औलिया के मुआ़-मले में शैत़ान के वस्वसे में आ कर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

करामात को अ़क्ल के तराज़ू में तोलने लगता है और यूं गुमराह हो जाता है । याद रखिये ! **करामत** कहते ही उस ख़िलाफ़े आ़दत बात को हैं जो आ़दतन मुहा़ल या'नी ज़ाहिरी अस्बाब के ज़रीए़ उस का सुदूर ना मुम्किन हो मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता़ से औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی से ऐसी बातें बसा अवक़ात सादिर हो जाती हैं । **नबी** से क़ब्ल अज़ ए'लाने नुबुव्वत ऐसी चीज़ें ज़ाहिर हों तो उन को **इरहास** कहते हैं और ए'लाने नुबुव्वत के बा'द सादिर हों तो **मो'जिज़ा** कहते हैं । आ़म मुअमिनीन से अगर ऐसी चीज़ें ज़ाहिर हों तो उसे **मऊ़नत** और वली से ज़ाहिर हों तो **करामत** कहते हैं । नीज़ काफ़िर या फ़ासिक़ से कोई ख़िलाफ़े आ़दत ज़ाहिर हो तो उसे **इस्तिद्राज** कहते हैं । (मुलख़्ख़स अज़ : बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 56, 58, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

अ़क्ल को तन्क़ीद से फ़ुरसत नहीं
इश्क़ पर आ'माल की बुन्याद रख

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ौसे आ'ज़म ने मिर्गी को भगा दिया

एक मर्तबा बारगाहे ग़ौसिय्यत मआब में हा़ज़िर हो कर एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : आ़लीजाह ! मेरी ज़ौजा को मिर्गी हो गई, हु़ज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "इस के कान में कह दो ग़ौसे आ'ज़म का हुक्म है कि बग़दाद से निकल जा ।" चुनान्चे उसी वक़्त वोह अच्छी हो गई ।

(مُلَخَّص از بَہجۃُ الاسرار لِلشَّطنُوفی ص ۱۴۰،۱۴۱ دارالکتب العلمیۃ بیروت)

मिर्गी शरीर जिन्न है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं **:** (मिर्गी) बहुत ख़बीस बला है और इसी को **उम्मुस्सिब्यान** कहते हैं, (बच्चों की एक बीमारी जिस से आ'ज़ा में झटके लगते हैं) अगर बच्चों को हो, वरना सर-अ़ (मिर्गी) । तजरिबे से साबित हुवा है कि अगर पच्चीस25 बरस के अन्दर अन्दर होगी तो उम्मीद है कि जाती रहे और अगर पच्चीस25 बरस के बा'द या पच्चीस25 बरस वाले को हुई तो अब न जाएगी । हां किसी वली की करामत या ता'वीज़ से जाती रहे तो येह अम्र आख़र (या'नी और बात) है । येह (या'नी मिर्गी) फ़िल ह़क़ीक़त एक (शरीर जिन्न या'नी) **शैत़ान** है जो इन्सान को सताता है ।

बच्चों को मिर्गी से बचाने का नुस्ख़ा

बच्चा पैदा होने के बा'द जो अज़ान में देर की जाती है, इस से अक्सर येह (या'नी मिर्गी का) मरज़ हो जाता है और अगर बच्चा पैदा होने के बा'द पहला काम येह किया जाए कि नहला कर अज़ान व इक़ामत बच्चे के कान में कह दी जाए तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उ़म्र भर (मिर्गी से) मह़फ़ूज़ी है ।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 417, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची)

रज़ा के सामने की ताब किस में
फ़लक वार इस पे तेरा ज़िल है या ग़ौस

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़ौसुल आ'ज़म का कूंआं

एक बार बग़दादे मुअ़ल्ला में त़ाऊ़न की बीमारी फैल गई और लोग धड़ाधड़ मरने लगे । लोगों ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में इस मुसीबत से नजात दिलाने की दर-ख़्वास्त पेश की । फ़रमाया : "हमारे मद्रसे के इर्द गिर्द जो घास है वोह खाओ और हमारे मद्रसे के कूंएं का पानी पियो, जो ऐसा करेगा वोह اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हर मरज़ से शिफ़ा पाएगा ।" चुनान्चे घास और कूंएं के पानी से शिफ़ा मिलनी शुरूअ़ हो गई यहां तक कि बग़दाद शरीफ़ से **त़ाऊ़न** ऐसा भागा कि फिर कभी पलट कर न आया ।

(تفریحُ الخاطر فی مناقب الشیخ عبدالقادر ص۴۳)

"त़बक़ाते कुब्रा" में ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का येह इर्शाद भी नक़्ल किया गया है : **"जिस मुसल्मान का मेरे मद्रसे से गुज़र हुवा क़ियामत के रोज़ उस के अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ होगी ।"** (اَلطَّبَقَاتُ الْكُبرىٰ لِلشَّعرانی الجزء الاوّل ص۱۷۹ دارالفکر بیروت) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

गुनाहों के अमराज़ की भी दवा दो
मुझे अब अ़त़ा हो शिफ़ा ग़ौसे आ'ज़म

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

डूबी हुई बारात

एक बार सरकारे बग़दाद हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم दरिया की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए, वहां एक बुढ़िया को देखा

जो ज़ारो क़िता़र रो रही थी। एक मुरीद ने बारगाहे ग़ौसिय्यत में अ़र्ज़ की : **या मुर्शिदी !** इस ज़ईफ़ा का इक्लौता ख़ूब-रू बेटा था, बेचारी ने उस की शादी रचाई दूल्हा निकाह़ कर के दुल्हन को इसी दरिया में कश्ती के ज़रीए़ अपने घर ला रहा था कि कश्ती उलट गई और **दूल्हा दुल्हन समेत सारी बारात डूब गई।** इस वाक़िए़ को आज **बारह[12] बरस** गुज़र चुके हैं मगर मां का जिगर है, बेचारी का ग़म जाता नहीं है, येह रोज़ाना यहां दरिया पर आती और बारात को न पा कर रो धो कर चली जाती है। हुज़ूर ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم को इस ज़ईफ़ा (या'नी बुढ़िया) पर बड़ा तर्स आया, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ के लिये हाथ उठा दिये, चन्द मिनट तक कुछ भी ज़ुहूर न हुवा, बेताब हो कर बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस क़दर ताख़ीर क्यूं ? इर्शाद हुवा : "ऐ मेरे प्यारे ! येह ताख़ीर ख़िलाफ़े तक़्दीर व तदबीर नहीं है, हम चाहते तो एक हुक्मे कुन से तमाम ज़मीन व आस्मान पैदा कर देते मगर ब मुक़्तज़ाए ह़िक्मत छ[6] दिन में पैदा किये, बारात को डूबे **12 साल** बीत चुके हैं, अब न वोह कश्ती बाक़ी रही है न ही उस की कोई सुवारी, तमाम इन्सानों का गोश्त वग़ैरा भी दरियाई जानवर खा चुके हैं, रेज़े रेज़े को अज्ज़ाए जिस्म में इकट्ठा करवा कर दोबारा ज़िन्दगी के मरह़ले में दाख़िल कर दिया है, अब उन की आमद का वक़्त है" अभी येह कलाम इख़्तिताम को भी न पहुंचा था कि **यकायक वोह कश्ती अपने तमाम तर साज़ो सामान के साथ मअ़ दूल्हा दुल्हन व बराती सत़्हे आब पर नुमूदार हो गई और चन्द ही लम्हों में कनारे आ लगी, तमाम बाराती सरकारे बग़्दाद** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **से दुआएं ले कर ख़ुशी ख़ुशी अपने घर पहुंचे। इस करामत को सुन कर बे शुमार कुफ़्फ़ार ने आ आ कर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم **के दस्ते ह़क़ परस्त पर इस्लाम क़बूल किया।**

(سلطانُ الاذکار فی مَناقب غوثِ الابرار، لشاہ محمد بن الھمدنی)

निकाला है पहले तो डूबे हुओं को
और अब डूबतों को बचा ग़ौसे आ'ज़म

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क्या बन्दा मुर्दा ज़िन्दा कर सकता है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बेशक मौत व ह़यात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इख़्तियार में है लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने किसी बन्दे को मुर्दे जिलाने की त़ाक़त बख़्शे तो उस के लिये कोई मुश्किल बात नहीं है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से किसी और को हम मुर्दा ज़िन्दा करने वाला तस्लीम करें तो इस से हमारे ईमान पर कोई असर नहीं पड़ता, अगर शैत़ान की बातों में आ कर किसी ने अपने ज़ेह्न में येह बिठा लिया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी और को मुर्दा ज़िन्दा करने की त़ाक़त ही नहीं दी तो उस का येह नज़रिया यक़ीनन हुक्मे क़ुरआनी के ख़िलाफ़ है देखिये क़ुरआने पाक ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा **रूहुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मरीज़ों को शिफ़ा देने और मुर्दे ज़िन्दा करने की त़ाक़त का साफ़ साफ़ ए'लान कर रहा है । जैसा कि पारह 3 **सूरए आले इमरान** की आयत नम्बर 49 में ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा **रूहुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का येह इर्शाद नक़्ल किया गया है :

وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मैं शिफ़ा देता हूं मादर ज़ाद अन्धों और सफ़ेद दाग़ वाले (या'नी कोढ़ी) को और मैं मुर्दे जिलाता हूं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से ।

उम्मीद है कि शैत़ान का डाला हुवा **वस्वसा** जड़ से कट गया होगा, क्यूं कि मुसल्मान का क़ुरआने पाक पर ईमान होता है और वोह हुक्मे क़ुरआने करीम के ख़िलाफ़ कोई दलील तस्लीम करता ही नहीं ।

बहर ह़ाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने मक़्बूल बन्दों को त़रह़ त़रह़ के इख़्तियारात से नवाज़ता है और ब अ़त़ाए ख़ुदा वन्दी उन से ऐसी बातें सादिर होती हैं जो अ़क़्ले इन्सानी की बुलन्दियों से वराउल वरा होती हैं। यक़ीनन **अहलुल्लाह** के तसर्रुफ़ात व इख़्तियारात की बुलन्दी को दुन्या वालों की परवाज़े अ़क़्ल छू भी नहीं सकती।

साइन्स दान की नज़र

दौरे ह़ाज़िर का सब से बड़ा साइन्स दान "आइन स्टाइन" कह गया है : "मैं ने रेडियो दूरबीन के ज़रीए एक ऐसा कह्कशां तो देख लिया है जो ज़मीन से **दो करोड़ नूरी साल** दूर है या'नी रोशनी जो **फ़ी सेकन्ड एक लाख छियासी हज़ार मील** त़ै करती है, वहां दो करोड़ साल में पहुंचेगी मगर जहां तक काएनात की सरह़दें मा'लूम करने का तअ़ल्लुक़ है अगर मेरी उ़म्र एक मिल्यन या'नी दस लाख बरस भी हो जाए तब भी दरयाफ़्त नहीं कर सकता।"

साइन्स दान के बर अ़क्स ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ के वली हुज़ूर **ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की नज़र की अ़-ज़मत व शान देखिये ! आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

نَظَرْتُ اِلٰى بِلَادِ اللّٰهِ جَمْعًا كَخَرْدَلَةٍ عَلٰى حُكْمِ التِّصَالِ

(या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के तमाम शहर मेरी नज़र में इस त़रह़ हैं जैसे हथेली में राई का दाना)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बारगाहे ग़ौसिय्यत मआब में अ़र्ज़ करते हैं :

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ***का है साया तुझ पर***
बोल बाला है तेरा ज़िक्र है ऊंचा तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बद अ़क़ीदा क़ातिल की सज़ा

अब विसाल शरीफ़ के त़वील अ़र्से के बा'द रन्जीत सिंघ के दौरे हुकूमत में हिन्दूस्तान में रूनुमा होने वाला एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ पढ़िये और झूमिये : एक नाम निहाद मुसल्मान जो करामाते औलिया का मुन्किर था, शूमई क़िस्मत से एक शादी शुदा हिन्दुवानी को दिल दे बैठा । एक बार हिन्दू अपनी बीवी को मयके पहुंचाने के लिये घर से बाहर निकला, उधर उस बद बख़्त आ़शिक़ पर शह्वत ने ग़-लबा किया । चुनान्चे उस ने उन का पीछा किया और एक सुनसान मक़ाम पर दोनों को घेर लिया, वोह दोनों पैदल थे और येह घोड़े पर सुवार था, इस ने झूटमूट हमदर्दी का इज़्हार करते हुए सुवारी की पेशकश की मगर हिन्दू ने इन्कार किया, वोह इस्रार करने लगा कि अच्छा औ़रत ही को पीछे बैठने की इजाज़त दे दो कि येह बेचारी थक जाएगी, हिन्दू को उस की निय्यत पर शुबा हो चला था लिहाज़ा उस ने कहा कि तुम ज़मानत दो कि किसी क़िस्म की ख़ियानत किये बिग़ैर मेरी बीवी को मन्ज़िल पर पहुंचा दोगे । उस ने कहा कि यहां जंगल में ज़ामिन कहां से लाऊं ? औ़रत बोल उठी : **मुसल्मान ग्यारहवीं वाले बड़े पीर साहिब** को बहुत मानते हैं, तुम उन्हीं की ज़मानत दे दो । वोह अगर्चे ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के तसर्रुफ़ात का क़ाइल नहीं था मगर येह सोच कर कि हां कह देने में क्या जाता है, उस ने हां कह दी । जूं ही औ़रत घोड़े पर सुवार हुई, उस ज़ालिम ने तलवार से उस के शोहर की गरदन उड़ा दी और घोड़े को एड़ लगा दी, औ़रत ग़म से निढाल और सहमी हुई बार बार मुड़ कर पीछे देखे जा रही थी । उस ने कहा कि बार बार पीछे देखने से कुछ ह़ासिल नहीं होगा, तुम्हारा शोहर अब वापस नहीं आ सकता । उस ने कप-कपाती हुई आवाज़ में कहा : मैं तो **बड़े पीर साहिब** को देख रही हूं । इस पर उस ने एक क़ह्क़हा लगा कर कहा कि बड़े पीर साहिब को तो फ़ौत हुए कई साल गुज़र चुके हैं, अब भला वोह कहां से आ सकते हैं ! इतना कहना था कि

अचानक दो[2] बुज़ुर्ग नुमूदार हुए उन में से एक ने बढ़ कर तलवार से उस बद अ़क़ीदा आ़शिक़ का सर उड़ा दिया फिर औ़रत को मअ़ घोड़े के उस जगह लाए जहां वोह हिन्दू कटा हुवा पड़ा था, दोनों में से एक बुज़ुर्ग ने कटा हुवा सर धड़ से मिला कर कहा : ''قُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ'' या'नी उठ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से । वोह हिन्दू उसी वक़्त ज़िन्दा हो गया । वोह दोनों[2] बुज़ुर्ग ग़ाइब हो गए । येह दोनों मियां बीवी मक़्तूल के घोड़े पर सुवार हो कर घर लौट आए । मक़्तूल के वारिसों ने घोड़ा पहचान कर रन्जीत सिंघ के कोर्ट में दोनों मियां बीवी पर केस कर दिया कि हमारा आदमी ग़ाइब है और घोड़ा इन के पास है, शायद इन लोगों ने हमारे आदमी को क़त्ल कर दिया है । पेशी हुई, उन मियां बीवी ने जंगल का सारा वाक़िआ़ कह सुनाया और कहा कि उन दोनों बुज़ुर्गों में से एक बुज़ुर्ग यहां के **मश्हूर मज्ज़ूब गुल मुह़म्मद शाह साह़िब** के हम-शक्ल थे । चुनान्चे उन मज्ज़ूब बुज़ुर्ग को बुलवाया गया, वोह तशरीफ़ ले आए और उन्हों ने आते ही अव्वल ता आख़िर सारा वाक़िआ़ लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ बयान कर दिया । लोग **हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की येह **ज़िन्दा करामत** सुन कर अश अश कर उठे । रन्जीत सिंघ ने मुक़द्दमा ख़ारिज करते हुए उन दोनों[2] मियां बीवी को इन्आ़मो इक्राम दे कर रुख़्सत किया । (الحقائق فی الحدائق ص۹۵)

अल अमां क़ह्र है ऐ ग़ौस वोह तीखा तेरा
मर के भी चैन से सोता नहीं मारा तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

70 बार एह़तिलाम

ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم का एक मुरीद एक ही रात में नई नई औ़रतों के सबब **सत्तर[70] बार मुह़्तलिम** हुवा । सुब्ह़ ग़ुस्ल से फ़ारिग़ हो कर अपनी परेशानी की फ़रियाद ले कर अपने मुर्शिदे

करीम हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की ख़िदमते बा अ-ज़मत में ह़ाज़िर हुवा । क़ब्ल इस के कि वोह कुछ अ़र्ज़ करे, सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने ख़ुद ही फ़रमाया : रात के वाक़िए़ से मत घबराओ, मैं ने रात लौह़े मह़फ़ूज़ पर नज़र डाली तो तुम्हारे बारे में सत्तर[70] मुख़्तलिफ़ औ़रतों के साथ ज़िना करना मुक़द्दर था, मैं ने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में इल्तिजा की, कि वोह तेरी तक़्दीर को बदल दे और इन गुनाहों से तेरी ह़िफ़ाज़त फ़रमाए । चुनान्चे उन सारे वाक़िआ़त को ख़्वाब में एह़तिलाम की सूरत में तब्दील कर दिया गया । **(بَهْجَةُ الاسرار ص۱۹۳)**

तेरे हाथ में हाथ मैं ने दिया है
तेरे हाथ है लाज या ग़ौसे आ'ज़म

(ज़ौक़े ना'त)

इर्शादाते ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से मा'लूम हुवा कि किसी पीरे कामिल की बैअ़त ज़रूर करनी चाहिये कि पीर की तवज्जोह से मुसीबतें टल जाती हैं और बा'ज़ अवक़ात बड़ी आफ़त छोटी आफ़त से बदल कर रह जाती है । "**बह्जतुल असरार शरीफ़**" में है, पीरों के पीर, पीर दस्त गीर, रोशन ज़मीर, क़ुत़्बे रब्बानी, मह़बूबे सुब्ह़ानी, पीरे लासानी, क़िन्दीले नूरानी, शहबाज़े ला मकानी, **अश्शैख़ अबू मुह़म्मद सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी** قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي का फ़रमाने बिशारत निशान है : मुझे एक बहुत बड़ा रजिस्टर दिया गया जिस में मेरे मुसाह़िबों और मेरे क़ियामत तक होने वाले मुरीदों के नाम दर्ज थे और कहा गया कि येह सारे अफ़राद तुम्हारे ह़वाले कर दिये गए हैं । फ़रमाते हैं, मैं ने दारोग़ए जहन्नम से इस्तिफ़्सार किया : क्या जहन्नम में मेरा कोई मुरीद भी है ? उन्हों ने जवाब दिया : "नहीं ।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मज़ीद फ़रमाया : मुझे अपने परवर दगार की इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मेरा **दस्ते**

ह़िमायत मेरे मुरीद पर इस त़रह़ है जिस त़रह़ आस्मान ज़मीन पर साया कुनां है । अगर मेरा मुरीद अच्छा न भी हो तो क्या हुवा اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं तो अच्छा हूं । मुझे अपने पालने वाले की इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मैं उस वक़्त तक अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से न हटूंगा जब तक अपने एक एक मुरीद को दाख़िले जन्नत न करवा लूं । (ایضاً)

मुरीदों को ख़त़रा नहीं बह़्रे ग़म से
कि बेड़े के हैं नाख़ुदा ग़ौसे आ'ज़म

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़ज़ीमुश्शान करामत

अबुल मुज़फ़्फ़र ह़सन नामी एक ताजिर ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ ह़म्माद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْجَوَاد की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **ह़ुज़ूर !** मैं तिजारत के लिये क़ाफ़िले के हमराह मुल्के शाम जा रहा हूं, आप से दुआ़ की दर-ख़्वास्त है । सय्यिदुना शैख़ ह़म्माद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْجَوَاد ने फ़रमाया : ''आप अपना सफ़र मुल्तवी कर दीजिये, अगर गए तो डाकू सारा माल भी लूट लेंगे और आप को क़त्ल भी कर डालेंगे ।'' ताजिर येह सुन कर बड़ा घबराया, इसी परेशानी के आ़लम में वापस आ रहा था कि रास्ते में ह़ुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم मिल गए, पूछा क्यूं परेशान हैं ? उस ने सारा वाक़िआ़ कह सुनाया । आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : परेशान न हों शौक़ से मुल्के शाम का सफ़र कीजिये, اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ सब बेहतर हो जाएगा । चुनान्चे वोह क़ाफ़िले के साथ रवाना हो गया, उसे कारोबार में बहुत नफ़्अ़ हुवा, वोह एक हज़ार1000 अशरफ़ियों की थेली लिये मुल्के शाम के शहर ''ह़लब'' पहुंचा । इत्तिफ़ाक़न वोह अशरफ़ियों की थेली कहीं रख कर भूल गया, इसी फ़िक्र में नींद ने ग़-लबा किया और सो गया । उस ने एक डरावना ख़्वाब देखा कि डाकूओं ने

क़ाफ़िले पर ह़म्ला कर के सारा माल लूट लिया है और इसे भी क़त्ल कर डाला है ! ख़ौफ़ के मारे उस की आंख खुल गई, घबरा कर उठा तो वहां कोई डाकू वग़ैरा न था। अब उसे याद आया कि अश्रफ़ियों की थेली उस ने फुलां जगह रखी है, झट वहां पहुंचा तो थेली मिल गई। ख़ुशी ख़ुशी बग़दाद शरीफ़ वापस आया। अब सोचने लगा कि पहले ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم से मिलूं या शैख़ ह़म्माद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الجَوَاد से ! इत्तिफ़ाक़न रास्ते में ही सय्यिदुना **शैख़ ह़म्माद** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الجَوَاد मिल गए और देखते ही फ़रमाने लगे : "पहले जा कर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم से मिलो कि वोह मह़बूबे रब्बानी हैं, उन्हों ने तुम्हारे ह़क़ में **17 बार दुआ मांगी** थी तब कहीं जा कर तुम्हारी तक़्दीर बदली जिस की मैं ने ख़बर दी थी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे साथ होने वाले वाक़िए को **ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की दुआ की ब-र-कत से बेदारी से ख़्वाब में मुन्तक़िल कर दिया।" चुनान्चे वोह बारगाहे ग़ौसिय्यत मआब में ह़ाज़िर हुवा। ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने देखते ही फ़रमाया : "वाक़ेई मैं ने तुम्हारे लिये 17 मर्तबा दुआ मांगी थी।" (بَهْجَةُ الاسرار ص ٦٤) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

ग़रज़ आक़ा से करूं अ़र्ज़ कि तेरी है पनाह
बन्दा मजबूर है ख़ातिर पे है क़ब्ज़ा तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अ़ज़ाबे क़ब्र से रिहाई

एक ग़मगीन नौ जवान ने आ कर बारगाहे ग़ौसिय्यत में फ़रियाद की : हुज़ूर ! मैं ने अपने वालिदे मर्ह़ूम को रात ख़्वाब में देखा, वोह कह रहे थे : "बेटा ! मैं अ़ज़ाबे क़ब्र में मुब्तला हूं, तू सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِي की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर मेरे लिये दुआ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे। (طبرانی)

की दर-ख़्वास्त कर।" येह सुन कर सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या तुम्हारे अब्बाजान मेरे मद्रसे से कभी गुज़रे हैं ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां। बस आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ामोश हो गए। वोह नौ जवान चला गया। दूसरे रोज़ ख़ुश ख़ुश हाज़िरे ख़िदमत हुवा और कहने लगा : **या मुर्शिद !** आज रात वालिदे मर्हूम सब्ज़ हुल्ला (या'नी सब्ज़ लिबास) ज़ैबे तन किये ख़्वाब में तशरीफ़ लाए, वोह बेहद ख़ुश थे, कह रहे थे : "बेटा ! सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی की ब-र-कत से मुझ से अ़ज़ाब दूर कर दिया गया है और येह सब्ज़ हुल्ला भी मिला है। मेरे प्यारे बेटे ! तू इन की ख़िदमत में रहा कर।" येह सुन कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है कि जो मुसल्मान तेरे **मद्रसे** से गुज़रेगा उस के अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ (या'नी कमी) की जाएगी। **(بَهْجَةُ الاسرار ص۱۹٤)**

नज़्अ़ में, गोर में, मीज़ां पे सरे पुल पे कहीं
न छुटे हाथ से दामाने मुअ़ल्ला तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुर्दे की चीख़ो पुकार

एक मर्तबा बारगाहे ग़ौसिय्यत मआब में ह़ाज़िर हो कर लोगों ने अ़र्ज़ की : आ़लीजाह ! "**बाबुल अज़ज**" के क़ब्रिस्तान में एक **क़ब्र** से मुर्दे के चीख़ने की आवाज़ें आ रही हैं। हुज़ूर ! कुछ करम फ़रमा दीजिये कि बेचारे का अ़ज़ाब दूर हो जाए। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : क्या उस ने मुझ से ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त पहना है ? लोगों ने अ़र्ज़ की : हमें मा'लूम नहीं। फ़रमाया : क्या कभी वोह मेरी मजलिस में ह़ाज़िर हुवा ? लोगों ने ला इ़ल्मी का इज़्हार किया। फ़रमाया : क्या उस ने कभी मेरा खाना खाया ? लोगों ने फिर ला इ़ल्मी का इज़्हार किया। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

ने पूछा : क्या उस ने कभी मेरे पीछे नमाज़ अदा की ? लोगों ने वोही जवाब दिया। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ज़रा सा सरे अक़्दस झुकाया तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर जलाल व वक़ार के आसार ज़ाहिर हुए। कुछ देर के बा'द फ़रमाया : मुझे अभी अभी फ़िरिश्तों ने बताया : "उस ने आप की ज़ियारत की है और उसे आप से अ़क़ीदत भी थी लिहाज़ा **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ने उस पर रह़्म किया।" اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ उस की **क़ब्र** से आवाज़ें आनी बन्द हो गईं। **(بَهجةُ الاسرار للشّطنوفی ص ١٩٤)**

बद सही, चोर सही, मुजरिमो नाकारा सही
ऐ वोह कैसा ही सही है तो करीमा तेरा

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ता़लिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व
बे हि़साब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
का पड़ोस

18 **रबीउ़न्नूर शरीफ़** 1427 सि.हि.
17-4-2006

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।